देव

कवित्त या सवैयों का सार / प्रतिपाद्य

प्रस्तुत पाठ में एक सवैया तथा दो कवित्त दिए गए हैं। पहले सवैये में कवि कृष्ण के रूप सौंदर्य को वर्णित कर रहे हैं। दूसरे कवित्त में देव वसंत ऋतु के सौंदर्य का वर्णन कर रहे हैं। उन्हें वसंत एक छोटे बच्चे के समान प्रतीत हो रहा है, उसके लिए प्रकृति नाना प्रकार के रूप धारण कर रही है। तीसरे कवित्त में चांदनी रात का वर्णन किया गया है। चांदनी रात में प्रकृति का सौंदर्य बहुत ही वैभवशाली है।

कवित्त या सवैयों का भाव सौंदर्य

(1) इस सवैये में कृष्ण के सौंदर्य का मनोहारी चित्र उकेरा गया है।
(2) इस कवित्त में वसंत के आगमन पर प्रकृति में होने वाले परिवर्तन का सुंदर चित्र अंकित हुआ है।
(3) इस कवित्त में चांदनी रात का दृश्य अपनी अलग छटा बिखेर रहा है।

कवित्त या सवैयों की भाषा शैली की विशेषताएँ

- अलंकारों का सुंदर प्रयोग
- श्रृंगार रस के सुंदर उदाहरण
- सवैये तथा कवित्त छंद का प्रयोग
- परिष्कृत व कोमल ब्रज भाषा का प्रयोग

कवित्त या सवैयों का उद्देश्य

- विद्यार्थियों में ब्रजभाषा में रचित साहित्य ज्ञान को बढ़ाना।
- विद्यार्थियों को ब्रजभाषा का ज्ञान देना।
- सगुण भक्ति तथा प्रकृति सौंदर्य को दर्शाना।

कवित्त या सवैयों का संदेश

- यह पाठ हमें संदेश देता है कि जीवन में प्रेम, भक्ति, प्रकृति को महत्व देना चाहिए।